International Journal of Social Research and Development
www.socialsciencejournal.net
Online ISSN: 2664-8709, Print ISSN: 2664-8695
Received: 01-12-2022, Accepted: 17-12-2022, Published: 03-01-2023
Volume 5, Issue 1, 2023, Page No. 1-2

भारत में मुगल साम्राज्य के पतन के विभिन्न कारणो पर एक अध्ययन

अमित कुमार
इतिहास विभाग, (UGC Net), महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, भारत

सारांश
मुगल साम्राज्य के पतन का कोई एक कारण नहीं है। मुगल साम्राज्य ने शांति और सुरक्षा का अभाव था मुगल साम्राज्य की स्थापना सैनिक बल पर ही हुई थी बाबर और हुमायूं को भारत की जनता विदेशी मानती थी, परंतु अकबर ने कुछ हद तक सुधार किया और राजपूतों के साथ विवाह व मित्रता स्थापित की इसी वजह से वह आम जन के प्रिय होते चले गए।
बाबर द्वारा स्थापित मुगल साम्राज्य अकबर, जहांगीर, शाहजहां और औरंगजेब के समय अपनी चरम सीमा पर था परंतु औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य का धीरे–धीरे पतन होने लगा। 1862 में बहादुरशाह जफर की मृत्यु के साथ ही मुगलों का हमेशा के लिए सूर्यास्त हो गया। मुगलों के पतन के कारण इस प्रकार हैं–

मूल शब्दः मुगल साम्राज्य, पतन, अकबर, जहांगीर, शाहजहां और औरंगजेब

उत्तराधिकार के नियम का न होना

मुगल काल में उत्तराधिकार का कोई नियम नहीं था। गद्दी को तलवार के बल पर ही जीता जाता था। बाबर ने उत्तराधिकार के नियम को लागू करने की कोशिश की और उसने हुमांयु को अपना उत्तराधिकार नियुक्त किया और शेष भाइयों में थोड़ा–थोड़ा राज्य बांट दिया लेकिन उससे वे संतुष्ट नहीं हुए और हुमांयु को अपने भाइयों के विद्रोह का सामना करना पड़ा। ऐसे ही अकबर को जीवन के अंतिम समय में अपने पुत्र सलीम के विद्रोह का सामना करना पड़ा। अकबर का अपने पोते खुसरो से अधिक लगाव था लेकिन सलीम को यह बात बिल्कुल भी पसंद नहीं थी इस वजह से सलीम ने विद्रोह कर दिया लेकिन अकबर के अंतिम समय में सलीम की क्षमा याचना से उसको गद्दी प्रदान कर दी गई।
'जैसी करणी वैसी भरनी' के साथ जहांगीर का शासनकाल शुरू हुआ। खुसरो के विद्रोह व शाहजहां के विद्रोह ने जहांगीर का जीवन कष्टों से भर दिया। शाहजहां को भी अपने जीवन में अपने पुत्रों का युद्ध देखना पड़ा। इसी प्रकार औरंगजेब ने भी विद्रोह का सामना किया गद्दी पर बैठने के लिए सगे संबंधियों का खून बहाना मुगल काल में आम बात हो गई थी। शाही दरबार में जो विद्रोह होता उसका सर राजनीति तथा जनता पर भी पड़ता था। सत्ता के लिए संघर्ष कर खुद मुगलों ने अपने लिए कब्र खोद ली थी शासकों को गद्दी से उतारने में ही मुगलों का ध्यान अधिक रहता था इन सबका लाभ उठाकर विरोधियों ने अपनी सत्ता को कायम करने में सफलता प्राप्त की।

औरंगजेब की नीतियां

पतन की प्रक्रिया औरंगजेब के समय में शुरू हो गई थी औरंगजेब की नीतियों ने मुगलकालीन व्यवस्था को कमजोर कर दिया। वह बड़ा महत्वकांक्षी था तथा उसने भौगोलिक सीमाओं को पार करना चाहा। मराठा, जाट तथा राजपूतों के प्रति कठोर बर्ताव व उनको प्रांतीय स्वायत्तता देने से इन्कार से उनके अंदर की वफादारी को समाप्त कर दिया जो पहले शासकों के प्रति थी। औरंगजेब अपने साम्राज्य के लिए एक अच्छा गठबंधन तैयार करने में असफल रहा। इस प्रकार उसने सभी को अपना शत्रु बना लिया। उसकी अंधविश्वासी धार्मिक नीतियों ने हिंदू तथा मुसलमानों में अलगाव पैदा कर दिया। इन नीतियों के कारण मुगल पतन की ओर बढ़ने लगा।

उत्तराधिकारियों का कमजोर होना

1707 से 14 तक हुए युद्धों ने साम्राज्य को कमजोर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कमजोर उत्तराधिकारियों की वजह से साम्राज्य ओर भी अधिक कमजोर हो गया। उत्तर मुगल शासकों में कोई भी विरोधी शक्तियों में एकता स्थापित नहीं कर सका। उनमें से अधिकतर कुलीन वर्गों की कठपुतली बने रहे। मुगलों के विघटन का एक ओर कारण स्वयं कुलीनों के आपसी संघर्ष चलने लगे और इससे आंतरिक विभाजन की प्रक्रिया शुरू हो गई।
कमजोर शासकों की गद्दी पर बैठने से वे भी गद्दी के बारे में सोचने लगे जो कभी जागीरें तथा सरकारी पदों पर सीमित थे। वे अधिक से अधिक जागीरें व उच्चे पद पाने के लिए लड़ने लगे। धन की कमी के कारण उन्होंने सेना की संख्या भी कम कर दी। जो उनकी सबसे बड़ी भूल थी।

नादिरशाह का आक्रमण

जब मुगल सम्राटों की अयोग्यता से एक–एक करके प्रांत मुगल साम्राज्य से अलग हो रहे थे तो सम्राट मूकदर्शक बना हुआ था ऐसी स्थिति का फायदा उठाकर ईरानी योद्धा नादिरशाह ने भारत पर आक्रमण कर दिया। 1738 ई० में गजनी को जीतकर वहां से मुगलों को भगा दिया। इस प्रकार काबुल पर भी विजय प्राप्त कर ली। पंजाब के सूबेदार जकारियां खां ने जनवरी 1739 ई० में आत्मसमर्पण कर दिया। 'तजकिशत–उल–वाकियात' नामक ग्रंथ से पता चलता है कि जब नादिरशाह द्वारा मुलक पर कब्जा करने से मुहम्मदशाह को नादिरशाह की शक्ति का आभास हुआ तब मुहम्मदशाह ने 75000 सैनिकों की सेना तैयार की तथा निजाम–उल–मुल्क व सआदत खा, नादिरशाह को रोकने के लिए आगे बढ़े। करनाल के पास दोनों पक्षों में युद्ध हुआ जिसमें मुगलों की पराजय हुई। निजाम ने एक संधि के द्वारा नादिरशाह को 50 लाख का हर्जाना देकर वापिस जाने के लिए राजी किया। आपसी विद्रोह के चलते कुछ सरदारों ने नादिरशाह को बताया कि वह दिल्ली जाकर कहीं अधिक धन प्राप्त कर सकता है।

नादिरशाह ने जब दिल्ली में प्रवेश किया तो मुहम्मदशाह ने उसका स्वागत किया। 22 मार्च 1739 ई० को दिल्ली में किसी ने नादिरशाह के मारे जाने की अफवाह फैला दी। इस प्रकार नादिरशाह के कई सैनिक मारे गए। इस घटना से क्रोधित होकर नादिरशाह ने 20000 लोगों का कत्ल व भारी मात्रा में लूटपाट की। गद्दी पर बैठने पर अपने नाम का रुतबा पढ़वाया व सिक्के ढलवाये। नादिरशाह भारी मात्रा में हीरे, जवाहरात, तख्ते ताऊस व प्रसिद्ध कोहिनूर हीरा लूटकर ईरान ले गया। इन सबकी कीमत 70 करोड़ थी। मुहम्मदशाह ने एक संधि के द्वारा पश्चिम का सारा प्रदेश नादिरशाह को देना स्वीकार किया।

इस प्रकार नादिरशाह के हमले ने मुहम्मदशाह की शक्ति को ओर अधिक कमजोर कर दिया। मराठों के आक्रमण मुगलों को कब्र में धकेलने का कार्य किया मुगलों की स्थिति का लाभ उठाकर मालवा, अवध, हैदराबाद, रुहेलखंड सभी राज्य स्वतंत्र हो गए। इस प्रकार 1748 इसमें में मुहम्मदशाह की मृत्यु हो गई तथा इसके शासनकाल में लगभग मुगल साम्राज्य का पतन हो गया था।

जनसंपर्क का अभाव

अकबर को छोड़कर और किसी मुगल शासक ने भारतीय जनता के साथ सीधा संपर्क स्थापित नहीं किया। उन्होंने जन सामान्य की दशा समझने, उनके हितों की रक्षा करने तथा उनकी सुख–सुविधाओं के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाये। मुगल अमीर उनका शोषण करते रहे। मुगल शासकों को भारतीय जनता का प्रेम, सहयोग व समर्थन प्राप्त नहीं हुआ। मुगल शक्ति का आधार उसकी सेना थी। सेना के कमजोर होते ही जनसमर्थन के अभाव में मुगलों का पतन होना निश्चित हो गया। इतिहासकार इरफान हबीब ने भी मुगल साम्राज्य के पतन के लिए कृषि संकट का सिद्धांत दिया है। हबीब के अनुसार इन समस्याओं का मूल कारण मनसब व्यवस्था की कार्यप्रणाली में ही समाहित था। इस व्यवस्था में किसानों का शोषण दिन प्रतिदिन बढ़ता गया। जिससे काश्त में कमी आई और भू–राजस्व भी घट गया।

शोध निष्कर्ष

निष्कर्ष तौर पर कहा जा सकता है कि मुगल साम्राज्य का कोई एक कारण नहीं था औरंगजेब की धार्मिक नीतियों को व मुगल प्रशासनिक व्यवस्था के आंतरिक दोषों को इसका कारण माना गया है। बाद में जो अध्ययन हुए उनमें मुगलों के पतन में मुख्य कारण जांगीर संकट से उत्पन्न प्रशासनिक अव्यवस्था को माना जाने लगा। आर्थिक ढांचे के अध्ययन से ये भी माना गया कि साम्राज्य कृषि व्यवस्था के संकट की ओर बढ़ रहा था। इससे मुगल साम्राज्य का पतन हुआ। किसानों के शोषण, जाटों, सतनामिओं व सिखों के विद्रोह में भी मुगल साम्राज्य की नींव हिला दी। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि एक से अधिक तत्वों ने मिलकर बाबर द्वारा स्थापित मुगल साम्राज्य रूपी वृक्ष को जड़ से उखाड़ फेंका।

संदर्भ सूची

1. डॉ० सजिवा, मुगल साम्राज्य के पतन के कारण, मध्यकालीन भारत (इंटरनेट)
2. Truemen's मध्यकालीन भारत, पृ० सं० 20,21
3. भारत का इतिहास (1200–1700) मध्यकालीन भारत डॉ० यशवीर सिंह, पृ० 176,183
4. भारतीय इतिहास– आर्यन कम्पिटिशन, आधुनिक भारत, पृ० सं० 407
5. एस० के० पाण्डेय (मध्यकालीन भारत)